सरिता के सपने, हुए अब अपने

गजेन्द्र और लक्ष्मी दोनों पति–पत्नी हैं। ये दोनों राजस्थान के बिंदुसर गांव में रहते हैं। उनकी दो बेटियां हैं, सरिता और कविता। सरिता की उम्र 14 साल है और वह इस साल 8वीं कक्षा में गई है और कविता चौथी कक्षा में। गजेन्द्र और लक्ष्मी की एक ही चिंता है, सरिता। वे दोनों सरिता को आगे पढ़ाना तो चाहते हैं, परन्तु उनके गांव में कोई भी स्कूल नहीं है। जहां वे सरिता का दाखिला 8वीं कक्षा के बाद करा सकें। यदि कोई स्कूल है, तो वे भी गांव से काफी दूर लगभग 10 किलोमीटर के आस–पास है। वे दोनों उसे गांव के बाहर भेजना नहीं चाहते। उनको एक ही बात का डर है कि अपनी बेटी को इतनी दूर अकेले पढ़ने कैसे भेजें, कहीं उसके साथ कोई ऊंच–नीच हो जाएगी, तो वे समाज को क्या जवाब देंगे। गांव में सब ताना मारेंगे कि बेटी को बड़े चले पढ़ाने वाले, खानदान की इज्ज़त की परवाह तक नहीं की आदि।

इसके साथ ही गजेन्द्र और लक्ष्मी एक और दुविधा से जूझ रहे हैं, वह है सरिता की शादी। दरअसल लक्ष्मी के भाई ने पिछले साल ही अपनी बेटियों की शादी की थी। उसे डर था कि अगर बेटियों की शादी वह बड़ी उम्र में करेगा, तो दहेज भी ज्यादा देना पड़ेगा और उसकी इतनी हैसियत भी नहीं कि वह ज्यादा दहेज दे सके। लक्ष्मी का भाई, लक्ष्मी और गजेन्द्र को भी यही सलाह देते रहता है कि उसे भी समय रहते सरिता की शादी कर देनी चाहिए, ताकि वह भी भारी–भरकम दहेज देने से बच जाए। गजेन्द्र और लक्ष्मी कभी–कभी सोचते हैं कि सरिता को घर के काम–काज़ सीखा कर उसके हाथ पीले कर देने चाहिए, लेकिन सरिता की छोटी उम्र देख वे अपने इस फैसले पर अमल नहीं कर पाते।

गजेन्द्र और लक्ष्मी अक्सर ही अपने घर में सरपंच जी की बेटी रजनी की बात करते रहते हैं। रजनी पिछले साल ही अपनी डॉक्टरी की पढ़ाई खत्म कर, जिला अस्पताल में डॉक्टर बनी है। वह जब भी अपने परिवार से मिलने गांव आती है,

तो वहां के बीमार लोगों का खुशी–खुशी चेकअप करती है। अक्सर गांव के लोग जिला अस्पताल में भी इलाज के लिए जाते रहते हैं, वहां अपने गांव के डॉक्टर यानि रजनी को देख गद–गद हो जाते हैं। जब लोग रजनी को 'डॉक्टर साहिबा' कह कर बुलाते हैं, तो सरपंच जी गर्व से चौड़े हो जाते है। सरिता घर में रजनी दीदी की बात अक्सर ही सुनती रहती है, वह भी उनकी तरह ही पढ़–लिख कर कुछ बनना चाहती है, जिससे उसकी भी एक पहचान बने।

गजेन्द्र और लक्ष्मी, सरिता को भी रजनी की तरह देखना चाहते हैं, परन्तु उनके मन में एक सवाल हमेशा ही बना रहता है कि सरपंच जी के पास तो पैसा था, इसलिए उन्होंने रजनी को पढ़ा–लिखा कर डॉक्टर बना दिया, किन्तु उनके पास तो फूटी कौड़ी भी नहीं है। वे कहां से सरिता की पढ़ाई का खर्चा उठा पाएंगे, सरिता को पढ़ाने–लिखाने की उनकी क्षमता कहां, वे तो ठहरे गरीब लोग।

गजेन्द्र जब भी किसी दुविधा में होता है तो वह अपने पड़ोसी मास्टर जी की राय जरुर लेता है। वहां उसकी समस्या का कोई न कोई समाधान मिल ही जाता है। एक दिन गजेन्द्र और मास्टर जी साथ बैठकर बात कर रहे होते हैं, तभी गजेन्द्र बातों–बातों में अपने मन की उथल–पूथल की बात मास्टर जी को बताता है कि वह सरिता की शादी नहीं कराना चाहता बल्कि उसे पढ़ाना चाहता है, पर वह पैसे व अन्य दिक्कतों के आगे हार मान जाता है। मास्टर जी गजेन्द्र को समझाते हैं कि "हमें बेटा और बेटी दोनों को पढ़ने का पूरा मौका देना चाहिए, ताकि उनका सही ढंग से मानसिक व शारीरिक विकास हो सके। शिक्षा उनको सशक्त बनाती है जिससे वे अपने जीवन में सही निर्णय ले पाते हैं और रही बात सरिता के आगे पढ़ने की तो सरकार ने बहुत सारी योजनाएं बना रखी हैं, जिसके द्वारा सरिता अपनी पढ़ाई पूरी कर सकती है।"

गजेन्द्र और मास्टर की ये सारी बातें पास में ही काम कर रही लक्ष्मी सुनती रहती है। उसे मास्टर जी की सारी बातें समझ में तो आती है, परन्तु ये सारी बातें उसकी दुविधा को पूरी तरह से कम नहीं कर पाती। लक्ष्मी इन सब बातों का जिक्र गजेन्द्र से करती है।

1

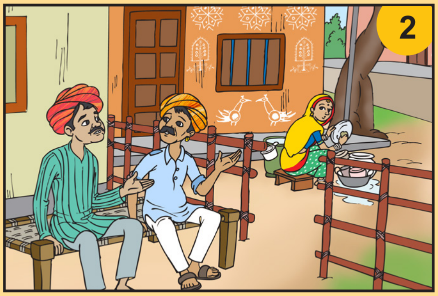
2

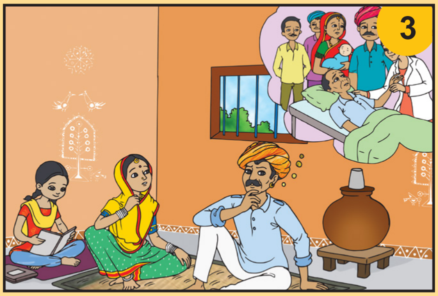
3

4

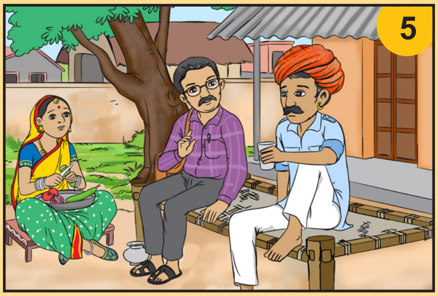
5

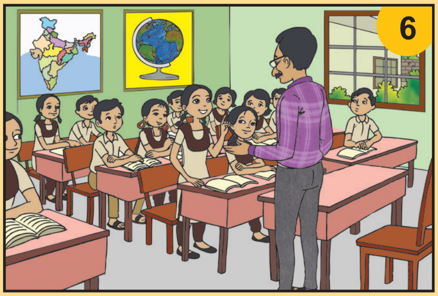
6

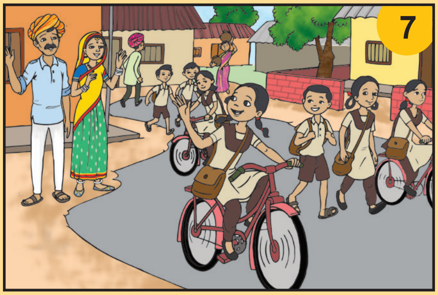
7

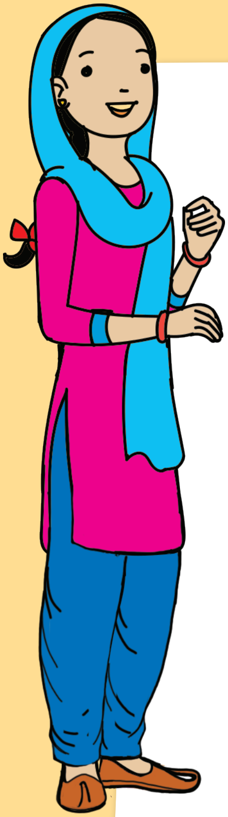

चर्चा के बिन्दु:

- क्या लड़की को गांव से बाहर शिक्षा के लिए भेजने का फैसला लेना गलत है?
- क्या लड़की की कम उम्र में शादी करने से दहेज कम देना पड़ता है?
- क्या समाज के कहने पर बच्चों की शादी कर देना उचित है?
- क्या आपके आस–पास कोई ऐसा उदाहरण है, जिसके बेटे या बेटी के सपनों के बारे में आपके घर में बाते होती रहती है?
- आप सरकार की शिक्षा संबंधी योजनाओं के बारे में क्या जानते हैं?
- क्या आपने बेटे या बेटी के सपनों के बारे में जानने की कोशिश की?
- आपकी शिक्षा के बारे में क्या राय है?

नए समाज की ओर
Towards a new dawn

बेटी बचाओ
बेटी पढ़ाओ

साझा अभियान
बाल विवाह मुक्त राजस्थान

हौसला दें, सम्मान दें,
बच्चों को खुद की पहचान दें!